रात्रीक्लास 28.2.68 ओमशांति मन्मनाभव

ब्राह्मण होते ही हैं राजयोगी। यह ब्राह्मणों का कुल है ना ;परंतु उनको सर्वोत्तम कुल नहीं कहेंगे। तुम ब्राह्मणों का है सर्वोत्तम कुल। कैलाश, तुमको कितने बाप हैं? सबसे अच्दा कौन सा है? (अलौकिक) क्यों? हम तो शिवजयंती हीरे जैसा कहते हैं। बाकी सब कौड़ी मिसल है। फिर तुम अलौकिक कैसे कहती हो? अच्छा ,क्रिश्चियन लोगों को भी तीन बाप है या सिर्फ भारतवासियों का? तीन बाप है सबको ;परंतु पहचानते नहीं हैं। जैसे भगवान कहते हैं ;परंतु उनके बायोग्राफी को जानते नहीं हैं क्रिश्चियन भी एडम यू मानते हैं, मुसलमान भी आदम–बीबी कहते हैं। सिर्फ लौकिक बाप बिगर और कोई के बायोग्राफी को नहीं जानते हैं। न अलौकिक ,न पारलौकिक को जानते हैं। कहने मात्र कह देते हैं। प्रजापिता तो बहुत करके भारतवासी ही कहते हैं। महावीर भी कह देते हैं। बच्चों को बहुत कुछ समझाना पड़ता है। वंडरफुल है ना। समझा सकते हो मनुष्य मात्र के तीन बाप हैं। तो भल पूछे। तुम्हारे पास आते तो बहुत ही हैं। बोलो, हम रीयल बातें पूछते हैं। आप भी मनुष्य हो। मनुष्य को कितने बाप हैं। यह जरूर जानते हैं गॉड है। ऐसे कोई नहीं कहेंगे गॉड फादर नहीं है। सिर्फ तुम यथार्थ रीति आक्युपेशन को जानते हो। लौकिक बाप को भी जानते हो कितने जन्म इस चक्र में आते हैं। देवताओं को वहां प्रजापिता ब्रह्मा का पता नहीं रहता। विचार करना पड़ता है किसको कितने बाप हैं। देवतायें भी पारलौकिक बाप के आक्युपेशन को नहीं जानते हैं। अभी तुम नालेजफुल बन रहे हो अर्थात् रचयिता और रचना के आदि,मध्य,अंत को तुम जानते हो। इसलिए बोर्ड में लिखते हो जो रचयिता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं वह एडियट हैं। आते हैं तो उनसे पूछना चाहिए ना कितने बाप हैं? पारलौकिक बाप को तुम इस समय ही जानते हो। याद करते हो। वह है हद का बाप, यह है बेहद का। बच्चों की बुद्धि में यह याद रहना है। जितना जो घड़ी2 समझाते रहते हैं उनको भिन्न2 प्वाइंट्स याद रहती है। बैरिस्टर, डॉक्टर आदि को जितनी प्वाइंट्स हैं उतनी ही आमदनी होती है। शांति के लिए पवित्रता के लिए भी समझाना बहुत सहज है। वायसलेस और विषस वर्ल्ड यह समझाना सहज है। सतयुग में हैं ही पवित्र देवताएं। योगबल किसको कहा जाता है इसको तुम ही जानते हो। बहुत बातें हैं समझाने लिए। पुरुषार्थ बिगर भी तुम रह नहीं सकते। हर बात में पुरुषार्थ करना होता है। महारथियों के आगे घोड़ेसवार ,प्यादे को लज्जा आती है। क्लास में सब एक समान तो नहीं पढ़ेंगे। अभी तुम पढ़ते हो भविष्य नई दुनियां के लिए। ऐसा कोई जानते ही नहीं कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। कलियुग के बाद है सतयुग। वहां है श्रेष्ठाचारी। यहां है भ्रष्टाचारी, पतित। तो पुरुषोत्तम संगमयुग इसको कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं कल्प2 राजयोग सिखाने आता हूं। बाप कहते हैं मेहनत लगती है। मैं जो हूं ,जैसा हूं कोई जानते नहीं हैं। परमात्मा का रियलाइजेशन परमात्मा ही कराते हैं। कितना आत्मा में पार्ट भरा हुआ है छोटी सी चीज़ में। यह बड़ी वंडरफुल बात है। गाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी। हरेक एक्टर्स अपना2 पार्ट भिन्न2 नाम–रूप ,देशकाल रिपीट करती है। यह भी समझते हो ज्ञान सागर बाप ही हमको सब कुछ देते हैं। सर्वशक्तिवान बाप का वर्सा चाहिए ना। एकदम विश्व का मालिक बना देते हैं। तुम बाप से बेहद की शक्ति लेते हो। जिससे तुम विश्व का मालिक बनते हो। ल0ना0 को भी राजाई कैसे मिली, क्या हुआ, कुछ नहीं जानते। तुम बच्चों को बहुत खुशी भी होनी चाहिए। बैज को देखने से ही अथाह खुशी होनी चाहिए। अम्बा मरे, बीबी मरे फिक्र की बात ही नहीं। सिर्फ देवताओं के फिक्र से फारिग हो न सके। कोई न कोई फिक्र रहता है। वहां फिक्र की बात ही नहीं। बाप भी बेफिक्री बादशाही देते हैं तो क्यों नहीं लेना चाहिए। माया के विघ्न पड़ते हैं, बरोबर। सभी स्टुडेंट को यह खुशी तो होनी चाहिए। हम बापदादा के बच्चे हैं। इनसे कोई उंच है नहीं। भक्ति से ट्रांसफर हो ज्ञान में आना मेहनत है। बाप ने समझाया भी है। कर्मातीत अवस्था को कब पावेंग? वह असार दिखाई पड़ेगी। अभी सभी को मैसेज ही कहां मिला है? अच्छा , रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार ,गुडनाइट। नमस्ते।